



नवसर्जन संस्कृति

RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 189
दि. 13.04.2026,
सोमवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

होर्मुज पर टकराव चरम पर: नाकेबंदी की तैयारी से बढ़ा युद्ध का खतरा, कूटनीति और संघर्ष के बीच झूलती दुनिया

वॉशिंगटन/तेहरान। मध्य पूर्व एक बार फिर वैश्विक तनाव का केंद्र बनता जा रहा है, जहां संयुक्त राज्य अमेरिका और ईरान के बीच टकराव खतरनाक मोड़ पर पहुंच चुका है। तेल, सामरिक शक्ति और भू-राजनीतिक प्रभाव के केंद्र Strait of Hormuz को लेकर बढ़ती तलखी ने दुनिया को एक संभावित बड़े संघर्ष की आशंका में डाल दिया है। अमेरिकी नेतृत्व ने जिस तरह से इस समुद्री मार्ग की नाकेबंदी के संकेत दिए हैं, उसने अंतरराष्ट्रीय राजनीति में हलचल मचा दी है और वैश्विक अर्थव्यवस्था पर भी इसके गहरे असर की आशंका जताई जा रही है। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति Donald Trump ने सख्त रुख अपनाते हुए स्पष्ट कर दिया है कि अमेरिका अब होर्मुज जलडमरूमध्य में आने-जाने वाले जहाजों की कड़ी निगरानी करेगा। उन्होंने चेतावनी दी है कि अगर कोई ईरान का परमाणु कार्यक्रम—पर कोई "टोल" देता है या अमेरिकी अथवा उसके सहयोगी देशों के जहाजों पर

हमला होता है, तो इसका करारा जवाब दिया जाएगा। यह बयान केवल चेतावनी नहीं, बल्कि एक संभावित सैन्य कार्रवाई की ओर इशारा करता है, जो पूरे क्षेत्र को युद्ध की आग में झोंक सकता है। दरअसल, Strait of Hormuz दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण समुद्री व्यापार मार्गों में से एक है। वैश्विक तेल आपूर्ति का लगभग एक-तिहाई हिस्सा इसी मार्ग से होकर गुजरता है। ऐसे में यदि यहाँ किसी भी प्रकार की बाधा उत्पन्न होती है, तो उसका सीधा असर अंतरराष्ट्रीय बाजारों पर पड़ना तय है। तेल की कीमतों में उछाल, आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान और वैश्विक आर्थिक अस्थिरता जैसी समस्याएँ तुरंत सामने आ सकती हैं। हाल ही में Islamabad में अमेरिका और ईरान के बीच करीब 20 घंटे तक चली उच्चस्तरीय वार्ता भी बेततीजा रही। इस वार्ता में कई अहम मुद्दों पर चर्चा हुई, लेकिन सबसे संवेदनशील विषय—ईरान का परमाणु कार्यक्रम—पर कोई सहमति नहीं बन सकी। अमेरिका ने साफ तौर पर कहा कि वह ईरान को



परमाणु हथियार विकसित करने की अनुमति नहीं देगा, जबकि ईरान ने अमेरिका द्वारा संभावित नाकेबंदी की घोषणा के साथ ही सैन्य गतिविधियाँ भी तेज हो गई हैं। खबरें हैं कि अमेरिकी

दोनों देशों के बीच अविश्वास और भी गहरा गया है। अमेरिका द्वारा संभावित नाकेबंदी की घोषणा के साथ ही सैन्य गतिविधियाँ भी तेज हो गई हैं। खबरें हैं कि अमेरिकी

नौसेना होर्मुज क्षेत्र में समुद्री माईस को हटाने और जहाजों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए बड़े स्तर पर ऑपरेशन की तैयारी कर रही है। इसके अलावा, NATO देशों से भी सहयोग लेने की

बात कही जा रही है, जिससे यह संकेत मिलता है कि यह केवल द्विपक्षीय तनाव नहीं, बल्कि एक व्यापक अंतरराष्ट्रीय सैन्य गठबंधन का रूप भी ले सकता है। दूसरी ओर, ईरान ने भी सख्त प्रतिक्रिया दी है। ईरानी नौसेना ने दावा किया है कि उसने एक अमेरिकी युद्धपोत को होर्मुज क्षेत्र से दूर रहने की चेतावनी दी। ईरानी मीडिया में जारी वीडियो में यह संदेश साफ तौर पर दिया गया कि यदि विदेशी जहाज निर्धारित सीमाओं का उल्लंघन करते हैं, तो उनके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। हालाँकि अमेरिका ने इस दावे की पुष्टि नहीं की है, लेकिन इस तरह की घटनाएँ क्षेत्र में बढ़ते तनाव का संकेत देती हैं। इस पूरे घटनाक्रम के बीच Vladimir Putin की अगुवाई में रूस ने कूटनीतिक पहल करते हुए मध्यस्थता की पेशकश की है। पुतिन ने स्पष्ट किया है कि इस संकेत का समाधान सैन्य कार्रवाई से नहीं, बल्कि संवाद और कूटनीति से ही संभव है। रूस की यह पहल ऐसे समय में आई है, जब दुनिया को एक बड़े युद्ध

के खतरे से बचाने के लिए संतुलित और शांतिपूर्ण प्रयासों की सख्त जरूरत है। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि होर्मुज जलडमरूमध्य में किसी प्रकार की नाकेबंदी लागू होती है, तो इसका प्रभाव केवल मध्य पूर्व तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि पूरी दुनिया इसकी चपेट में आ सकती है। भारत, चीन, जापान और यूरोप जैसे बड़े आयातक देशों की ऊर्जा सुरक्षा पर इसका सीधा असर पड़ेगा। तेल की कीमतों में अचानक उछाल से महंगाई बढ़ सकती है और वैश्विक अर्थव्यवस्था में मंदी का खतरा भी उत्पन्न हो सकता है। भारत जैसे देश, जो अपनी ऊर्जा जरूरतों के लिए बड़े पैमाने पर आयात पर निर्भर हैं, इस स्थिति से विशेष रूप से प्रभावित हो सकते हैं। ऐसे में भारत की कूटनीतिक भूमिका पर महत्वपूर्ण जोर देना है, वहीं उसे अपने रणनीतिक हितों और वैश्विक शांति के बीच संतुलन बनाना होगा। इस पूरे संकेत में एक और महत्वपूर्ण पहलू यह है कि दोनों पक्ष अपनी-अपनी स्थिति से पीछे हटने को तैयार नहीं दिख

रहे हैं। अमेरिका अपनी वैश्विक प्रभुत्व और सुरक्षा नीति के तहत सख्त रुख अपनाए हुए है, जबकि ईरान अपने संप्रभु अधिकारों और क्षेत्रीय प्रभाव को बनाए रखने के लिए डटा हुआ है। यह स्थिति एक "डेडलॉक" की तरह बन गई है, जहाँ कोई भी पक्ष पहले झुकना नहीं चाहता। हालाँकि इतिहास गवाह है कि जब भी ऐसे हालात बने हैं, तो अंततः कूटनीति ही समाधान का रास्ता बनी है। लेकिन वर्तमान परिस्थितियों में जिस तरह से बयानबाजी और सैन्य तैयारियाँ बढ़ रही हैं, उससे यह आशंका भी बनी हुई है कि कहीं कोई छोटी सी चूक बड़े संघर्ष का कारण न बन जाए। फिलहाल दुनिया की निगाहें इस पूरे घटनाक्रम पर टिकी हुई हैं। एक ओर जहाँ युद्ध का खतरा मंडरा रहा है, वहीं दूसरी ओर कूटनीतिक प्रयास भी जारी हैं। आने वाले दिनों में यह स्पष्ट होगा कि यह टकराव संवाद के जरिए सुलझाया जा फिर दुनिया को एक और बड़े संकेत का सामना करना पड़ेगा।

नासिक कांड में बड़ा खुलासा: 'मास्टरमाइंड' निदा खान फरार, एसआईटी की दबिश तेज, बड़े नेटवर्क की आशंका

महाराष्ट्र के नासिक में सामने आए महिला उन्मीडन और कथित जबरन धर्मांतरण के मामले ने अब गंभीर और जटिल रूप ले लिया है। जॉन जैसे-जैसे आगे बढ़ रही हैं, वैसे-वैसे नए खुलासे हो रहे हैं, जिन्होंने इस पूरे प्रकरण को एक संगठित नेटवर्क की दिशा में मोड़ दिया है। अब तक की जांच में सबसे बड़ा खुलासा यह हुआ है कि इस पूरे मामले की कथित "मास्टरमाइंड" मानी जा रही निदा खान केस दर्ज होने से पहले ही फरार हो चुकी है, और पुलिस की विशेष जांच टीम (SIT) उसकी तलाश में लगातार छापेमारी कर रही है। जांच एजेंसियों के अनुसार, यह कोई साधारण उन्मीडन का मामला नहीं, बल्कि बेहद सुनिश्चित तरीके से चलाया जा रहा एक नेटवर्क हो सकता है, जिसमें कई लोग अलग-अलग भूमिकाओं में सक्रिय थे। एसआईटी को शक है कि निदा खान फिलहाल राज्य के किसी भी आबादी वाले इलाके में छिपी हुई है, ताकि उसकी पहचान और लोकेशन का पता लगाया मुश्किल हो सके। इस मामले की शुरुआत एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में काम करने वाली महिलाओं की शिकायतों से हुई थी। धीरे-धीरे सामने

आया कि कुछ आरोपी कर्मचारियों ने महिला सहकर्मियों के साथ न केवल छेड़छाड़ और मानसिक उन्मीडन किया, बल्कि उन्हें धार्मिक रूप से प्रभावित करने और कथित तौर पर जबरन धर्मांतरण के लिए भी दबाव बनाया गया। जांच में यह भी सामने आया कि इस पूरे नेटवर्क की कड़ी के रूप में निदा खान ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। एसआईटी के मुताबिक, निदा खान ने बड़ी चालाकी से कंपनी में काम करने वाली अन्य कर्मियों की युवतियों से पहले दोस्ती की। यह दोस्ती केवल सामाजिक नहीं थी, बल्कि एक सोची-समझी रणनीति का हिस्सा थी। वह धीरे-धीरे इन युवतियों को अपने प्रभाव में लेकर उन्हें मुख्य आरोपियों के संपर्क में लाती थी। आरोप है कि इसके बाद इन युवतियों पर विशेष धार्मिक संस्कृति अपनाते का दबाव बनाया जाता था—जिसमें पहनावे से लेकर व्यवहार तक में बदलाव शामिल था। जांच में यह भी खुलासा हुआ है कि इस नेटवर्क में एक और युवती शामिल थी, जिसने समय रहते स्थिति की गंभीरता को समझ लिया और खुद को इस पूरे प्रकरण से अलग कर लिया। उसने कंपनी से अपना

तबादल करा लिया, जिससे वह इस विवाद से दूर रह सकी। यह तथ्य इस बात की ओर इशारा करता है कि कंपनी के भीतर कुछ लोगों को पहले से इस नेटवर्क की गतिविधियों का अंदाजा हो सकता था। अब तक इस मामले में देवलाली कैप और मुंबई नाका पुलिस थलों में कुल 9 मामले दर्ज किए जा चुके हैं। इनमें 8 महिलाएं और 1 और कई लोग इसकी चपेट में आए हैं। पुलिस ने इस मामले में अब तक 6 मुख्य आरोपियों को गिरफ्तार किया है, जिनमें दानिश शेख और आसिफ अंसारी जैसे नाम शामिल हैं। ये सभी फिलहाल नासिक रोड जेल में बंद हैं और उनसे लगातार पूछताछ की जा रही है, ताकि नेटवर्क के अन्य सदस्यों और कर्मियों का खुलासा हो सके। इस पूरे मामले में एक और अहम नाम सामने आया है—अश्विनी चैनानी, जो कंपनी में असिस्टेंट जनरल मैनेजर के पद पर थीं। उन पर आरोप है कि उन्होंने पीड़ितों की शिकायतों को गंभीरता से नहीं लिया और जानबूझकर उन्हें अधिक काम देकर

मानसिक रूप से प्रताड़ित किया। उनकी पुलिस हिरासत 13 अप्रैल को समाप्त हो रही है और उन्हें कोर्ट में पेश किया जाएगा। संभावना है कि एसआईटी उनकी हिरासत बढ़ाने की मांग कर सकती है, ताकि उनसे और गहराई से पूछताछ की जा सके। जांच एजेंसियों का मानना है कि यह मामला केवल एक कंपनी या कुछ व्यक्तियों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके पीछे एक बड़ा और संगठित रैकेट हो सकता है। निदा खान की गिरफ्तारी को इस पूरे नेटवर्क की "कुंजी" माना जा रहा है, क्योंकि उसके पास ऐसे कई राज हो सकते हैं, जो इस मामले की जड़ों तक पहुंचने में मदद करेंगे। एसआईटी ने उसकी तलाश के लिए दो विशेष टीमें गठित की हैं, जो लगातार अलग-अलग स्थानों पर दबिश दे रही हैं। पुलिस तकनीकी सर्विंसांस, कान डिटेल्स और सोशल नेटवर्क गतिविधियों के जरिए उसकी लोकेशन ट्रैक करने की कोशिश कर रही है। हालाँकि अब तक वह पुलिस की पकड़ से बाहर है, जिससे यह भी आशंका जताई जा रही है कि उसे किसी संगठित समूह का संरक्षण मिल रहा हो सकता है।

कर्नाटक कांग्रेस में उठापटक तेज: 30 विधायकों का दिल्ली कूच, कैबिनेट फेरबदल को लेकर आलाकमान पर दबाव

बेंगलुरु। कर्नाटक की सियासत में एक बार फिर हलचल तेज हो गई है, जहाँ सत्तारूढ़ कांग्रेस पार्टी के भीतर अस्तोष अब खुलकर सामने आने लगा है। करीब 30 वरिष्ठ विधायकों का एक समूह अचानक दिल्ली पहुंच गया है, जिससे यह स्पष्ट संकेत मिल रहा है कि राज्य सरकार के भीतर मंत्री पद और सत्ता में हिस्सेदारी को लेकर गहरी खींचतान चल रही है। यह घटनाक्रम न केवल सरकार के लिए चुनौती बनता जा रहा है, बल्कि पार्टी नेतृत्व के सामने भी एक अहम राजनीतिक परीक्षा खड़ी कर रहा है। सत्ता में अस्तोष, ये विधायक सीधे पार्टी आलाकमान के सामने अपनी मांग रखने के इरादे से दिल्ली पहुंचे हैं। उनका मुख्य मुद्दा राज्य कैबिनेट में बड़े पैमाने पर फेरबदल का है। उनका मानना है कि मौजूदा कैबिनेट में कई ऐसे मंत्री हैं, जो लंबे समय से पद पर बने हुए हैं और उन्हें कई बार अवसर मिल चुका है, जबकि पार्टी के अन्य वरिष्ठ और अनुभवी विधायक भी मंत्री बनने का इंतजार कर रहे हैं। इस असंतुलन को दूर करने के लिए वे व्यापक पुनर्गठन की मांग कर रहे हैं। दिल्ली पहुंचे इस गुट की योजना महूल गांधी



से मुलाकात करने की है, जहाँ वे अपनी बात सीधे शीर्ष नेतृत्व के सामने रखेंगे। इसके अलावा मल्लिकार्जुन खरगे, के.सी. वेणुगोपाल और रणदीप सुजुजेवाला जैसे वरिष्ठ नेताओं से भी मुलाकात का कार्यक्रम तय किया गया है। यह दिखाता है कि मामला केवल राज्य स्तर तक सीमित नहीं है, बल्कि राष्ट्रीय नेतृत्व के स्तर पर सुलझाने की कोशिश की जा रही है। विधायकों का तर्क है कि यदि पार्टी को मजबूत बनाए रखना है और जमीनी स्तर पर कार्यकर्ताओं का मनोबल बनाए रखना है, तो सत्ता में संतुलित भागीदारी जरूरी है। उनका कहना है कि नए चेहरों को अवसर देने से न केवल पार्टी में ऊर्जा का संचार होगा, बल्कि आगामी चुनावों में भी इसका सकारात्मक प्रभाव देखने को मिलेगा।

खासतौर पर वे इस बात पर जोर दे रहे हैं कि कैबिनेट की बड़ी संख्या में सीटों को खाली कर नए सिरे से गठन किया जाए। राजनीतिक सूत्रों के मुताबिक, यह असंतोष अचानक पैदा नहीं हुआ है, बल्कि इसकी पृष्ठभूमि पहले से तैयार की जा रही थी। मार्च महिने में हुई तथ्याकथित "डिनर डिग्लोसेस" के दौरान ही विधायकों के एक वर्ग ने आपसी रणनीति बनाई थी। उस समय यह मुद्दा सार्वजनिक रूप से सामने नहीं आया, लेकिन हालिया उपचुनावों के बाद यह असंतोष और अधिक मुखर हो गया है। इस पूरे घटनाक्रम पर मुख्यमंत्री सिद्धार्थमैया ने संयमित प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कहा कि विधायकों का दिल्ली जाकर अपनी बात रखना लोकतांत्रिक प्रक्रिया का हिस्सा है और इसमें कोई गलत बात नहीं है। साथ ही उन्होंने यह भी संकेत दिया कि कैबिनेट फेरबदल की संभावना पहले से थी, लेकिन चुनाव और बजट सत्र के चलते इसमें देरी हो गई। उनके इस बयान को एक तरह से यह संकेत माना जा रहा है कि सरकार

इस मुद्दे पर पूरी तरह आंखें मूंदे नहीं बंदी है। हालाँकि, विधायकों का गुट केवल सीमित बदलाव से संतुष्ट नहीं दिख रहा है। उनका स्पष्ट कहना है कि अगर फेरबदल करना ही है, तो उसे व्यापक स्तर पर किया जाना चाहिए। कुछ विधायकों को ने तो यहाँ तक सुझाव दिया है कि कैबिनेट की लगभग 25 सीटों को खाली कर पूरी संरचना को नए सिरे से तैयार किया जाए। यह मांग अपने आप में काफी बड़ी है और यदि इसे स्वीकार किया जाता है, तो यह राज्य की राजनीति में बड़ा बदलाव साबित हो सकता है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह घटनाक्रम कांग्रेस के लिए एक "टेस्ट केस" की तरह है। एक ओर पार्टी को अपने विधायकों की नाराजगी को शांत करना है, वहीं दूसरी ओर सरकार की स्थिरता भी बनाए रखनी है। अगर फेरबदल में देरी होती है या असंतोष को सही तरीके से संभाला नहीं गया, तो यह अंदरूनी कलह और गहरी हो सकती है। इसके साथ ही विपक्ष भी इस स्थिति पर नजर बनाए हुए है और किसी भी राजनीतिक अस्थिरता का फायदा उठाने की कोशिश कर सकता है।

कानूनी उपाय और बुजुर्ग माता-पिता की देखभाल के लिए समाज की बढ़ती जिम्मेदारी

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। हमारे देश में बुजुर्ग माता-पिता की उपेक्षा एक गंभीर सामाजिक समस्या के रूप में उभर रही है। गांवों से शहरों की ओर पलायन, संयुक्त परिवारों के विघटन और तेजी से बदलती जीवनशैली के कारण बुजुर्गों की उपेक्षा के मामले बढ़ रहे हैं। अक्सर, जीवन के अंतिम पड़ाव में माता-पिता के पास एकांत में रहने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचता या वे वृद्धाश्रमों में शरण लेने के लिए विवश हो जाते हैं। इस संदर्भ में, तेलंगाना विधानसभा द्वारा पारित "कर्मचारी उत्तरदायित्व एवं अभिभावक देखभाल विधेयक, 2026" को कई मायनों में एक महत्वपूर्ण विधायी कदम के रूप में सराहा जा रहा है। इस विधेयक के अनुसार, राज्य के निवाचित प्रतिनिधियों के सन्त-साथ सरकारी और निजी क्षेत्र के कर्मचारियों के लिए अपने बुजुर्ग माता-पिता की देखभाल करना अनिवार्य है। इस आदेश का पालन न करने पर उनके वेतन से कटौती की जाएगी। विशेष रूप से, 15% या 10,000 रुपये (जो भी कम हो)

सीधे उनके माता-पिता को भरण-पोषण भत्ते के रूप में भेजे जाएंगे। इस विधेयक का मुख्य उद्देश्य कर्मचारियों में नैतिक मूल्यों और पारिवारिक जिम्मेदारियों के प्रति प्रतिबद्धता की भावना पैदा करना और वरिष्ठ नागरिकों की आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित करना है। इसके बावजूद, बुजुर्ग माता-पिता की देखभाल का मुद्दा सड़कों से लेकर संसद तक चर्चा का विषय बना हुआ है। देश में पहले से ही एक राष्ट्रीय कानून है, "माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों के भरण-पोषण एवं कल्याण अधिनियम, 2007"। लेकिन बुजुर्गों की देखभाल पर इसका प्रभाव काफी हद तक नाग्य रह रहा है। अक्सर कानूनी प्रक्रिया इतनी जटिल और बोझिल हो जाती है कि बुजुर्ग निराश हो जाते हैं और अपनी शिकायतें वापस ले लेते हैं। इस संदर्भ में, यह निर्विवाद है कि तेलंगाना विधानसभा द्वारा पारित विधेयक अधिक प्रभावी होगा। अब यह देखा बाकी है कि तेलंगाना के बाद देश के अन्य कौन से राज्य बुजुर्गों की सहायता के लिए ऐसे विधेयक पारित करेंगे।

सूरत भाजपा के कार्यकर्ताओं में वाल्मीकि समुदाय की उपेक्षा को लेकर आक्रोश है और बहिष्कार की चर्चा भी हो रही है

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। सूरत नगर निगम चुनाव में, भाजपा से जुड़े वाल्मीकि समुदाय के कार्यकर्ताओं में असंतोष साफ दिख रहा है, जो वर्षों से भाजपा का झंडा धारण करते आ रहे हैं। 12 अप्रैल 2026 को दिल्ली गेट पर हुई बैठक में, भाजपा के टिकट धारक वाल्मीकि समुदाय के अधिकार कार्यकर्ता निराश नजर आए। टिकट तय होने की बात सुनकर कार्यकर्ताओं के चेहरे उतर गए और पार्टी के प्रति उनकी स्पष्ट नापसंदगी साफ झलक रही थी। सूरत से भाजपा के लिए न दिन-रात काम कर रहे वाल्मीकि समुदाय के शिक्षित भाजपा कार्यकर्ताओं को उपेक्षा से पूरा समाज स्तब्ध है। फिलहाल, पार्टी अपनी अगली रणनीति पेश करेगी और मतदान का बहिष्कार करने पर विचार करेगी। कुछ कार्यकर्ता तो बीस साल से अधिक समय से भाजपा के साथ होने के बावजूद घर से बाहर निकलने में भी हिचकिका रहे हैं। वाल्मीकि समुदाय का एकमात्र सवाल



यह है कि 120 सीटों में से एक भी वाल्मीकि उम्मीदवार नहीं है। भाजपा ने न केवल वाल्मीकि समुदाय से जुड़े भाजपा कार्यकर्ताओं को बल्कि पूरे वाल्मीकि समुदाय को नजरअंदाज किया है। "साहू न साथ साहू न विकास" की बात करने वाली भाजपा एक भी वाल्मीकि उम्मीदवार को शामिल नहीं कर पाई है। वाल्मीकि समुदाय से जुड़े भाजपा कार्यकर्ताओं का कहना है कि आने वाले दिनों में वाल्मीकि समुदाय अपनी रणनीति तय करेगा।

नवसर्जन संस्कृति हिन्दी

JioTV CHENNAL NO. 2063

Jio Air Fiber

Jio Tv +

Jio Fiber

Daily Hunt

ebaba TV

Dish Plus

DTH live OTT

Rock TV

Airtel

Amezone Fire

Roku Tv-US.UK

मध्य पूर्व में बढ़ता टकराव: तुर्की-इजराइल विवाद ने पकड़ा खतरनाक मोड़, एर्दोगन की खुली चेतावनी से बढ़ी वैश्विक चिंता

अंकारा/तेल अबीव। मध्य पूर्व का भू-राजनीतिक परिदृश्य इन दिनों तेजी से बदल रहा है और तनाव की लपटें लगातार नई सीमाओं को छू रही हैं। एक ओर पहले से ही गांज संघर्ष, अमेरिका-ईरान विवाद और क्षेत्रीय अस्थिरता ने हालात को जटिल बना रखा है, वहीं अब Turkey और Israel के बीच बढ़ती जुबानी जंग ने स्थिति को और विस्फोटक बना दिया है। तुर्की के राष्ट्रपति Recep Tayyip Erdoan द्वारा दी गई खुली चेतावनी ने अंतरराष्ट्रीय समुदाय को चिंता बढ़ा दी है, जबकि इजराइल के प्रधानमंत्री Benjamin

Netanyahu पर किए गए तीखे हमलों ने दोनों देशों के रिश्तों को एक नए निम्न स्तर पर पहुंचा दिया है। राष्ट्रपति एर्दोगन ने हाल ही में एक सार्वजनिक कार्यक्रम में जिस तरह का आक्रामक रुख अपनाया, उसने यह स्पष्ट संकेत दे दिया कि तुर्की अब केवल कूटनीतिक विरोध तक सीमित रहने वाला नहीं है। उन्होंने कहा कि यदि हालात ने मजबूर किया, तो तुर्की इजराइल के खिलाफ प्रत्यक्ष कार्रवाई से भी पीछे नहीं हटेगा। एर्दोगन का यह बयान केवल एक राजनीतिक प्रतिक्रिया नहीं,

बल्कि एक रणनीतिक संदेश भी माना जा रहा है, जो पूरे मध्य पूर्व में शक्ति संतुलन को प्रभावित कर सकता है। एर्दोगन ने अपने भाषण में यह भी उल्लेख किया कि तुर्की पहले भी Libya और Nagorno-Karabakh जैसे क्षेत्रों में सक्रिय हस्तक्षेप कर चुका है और वहाँ अपने हितों की रक्षा के लिए निर्णायक कदम उठाए हैं। इस संदर्भ में उन्होंने संकेत दिया कि यदि जरूरत पड़ी, तो इजराइल के खिलाफ भी इसी प्रकार की नीति अपनाई जा सकती है। यह बयान सीधे तौर पर सैन्य हस्तक्षेप की संभावना को जन्म देता है, जो

किसी बड़े क्षेत्रीय संघर्ष का कारण बन सकता है। दूसरी ओर, इजराइल ने तुर्की के इन बयानों को गंभीरता से लिया है। हालाँकि आधिकारिक स्तर पर इजराइल ने संयमित प्रतिक्रिया दी है, लेकिन राजनीतिक गलियारों में इसे एक बड़ी चेतावनी के रूप में देखा जा रहा है। प्रधानमंत्री बेजामिन नेतन्याहू पर तेजी से दबाव लगाए गए आरोपों ने स्थिति को और अधिक तनावपूर्ण बना दिया है। तुर्की के विदेश मंत्रालय ने नेतन्याहू पर शांति प्रयासों को विफल करने और क्षेत्रीय अस्थिरता को बढ़ावा देने का आरोप लगाया है।

देश-दुनिया के नवीनतम समाचार प्राप्त करने के लिए आज ही नवसर्जन संस्कृति हिंदी चैनल देखिये

“मुझे जाना है उस पार...”: सुरों की मल्लिका Asha Bhosle को अंतिम विदाई, संगीत जगत में छाया गहरा शोक

मुंबई। भारतीय संगीत जगत की वह अमर आवाज, जिसने दशकों तक हर दिल को धड़कनों को सुरों में पिरोया, अब खामोश हो गई है। “मुझे जाना है उस पार” जैसी पंक्तियां आज केवल एक गीत नहीं, बल्कि जीवन की अंतिम सच्चाई बनकर सामने आई हैं। महान पार्श्व गायिका Asha Bhosle का 92 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनके जाने के साथ ही भारतीय फिल्म संगीत का एक स्वर्णिम अध्याय हमेशा के लिए इतिहास में दर्ज हो गया। शनिवार रात तबीयत बिगड़ने के बाद उन्हें मुंबई के Breach Candy Hospital में भर्ती कराया गया था, जहां इलाज के दौरान उन्होंने अंतिम सांस ली। डॉक्टरों के अनुसार, उम्र से जुड़ी जटिलताओं और मल्टी-ऑर्गन फेलियर के कारण उनका निधन हुआ। उनके पार्थिव शरीर को अंतिम दर्शन के लिए लोअर परेल स्थित उनके निवास पर रखा गया, जहां हजारों की संख्या में प्रशंसक, संगीत प्रेमी और फिल्मी हस्तियां उन्हें श्रद्धांजलि देने पहुंचे। सोमवार शाम 4 बजे उनका अंतिम संस्कार मुंबई के Shivaji Park में राजकीय सम्मान के साथ किया जाएगा। Asha Bhosle का निधन केवल एक कलाकार की विदाई नहीं, बल्कि उस युग का अंत है, जिसने भारतीय संगीत को

वैश्विक पहचान दिलाई। उनकी आवाज में वह जादू था, जो पीढ़ियों को जोड़ता था—दादा-दादी से लेकर आज के युवाओं तक, हर किसी के जीवन में उनके गीतों की एक अलग जगह थी। 8 सितंबर 1933 को महाराष्ट्र के सांगली में जन्मी Asha Bhosle को संगीत विरासत में मिला था। उनके पिता Dinanath Mangeshkar एक प्रतिष्ठित शास्त्रीय गायक और रंगकर्मी थे। बचपन से ही संगीत का माहौल मिला, लेकिन जीवन ने उन्हें जल्दी ही संघर्षों से परिचित करा दिया। पिता के निधन के बाद कम उम्र में ही परिवार की जिम्मेदारियां उनके कंधों पर आ गईं। बहन Lata Mangeshkar के साथे में रहते हुए भी उन्होंने अपनी अलग पहचान बनाई। जहां एक ओर लता मंगेशकर को मधुर और शास्त्रीय गीतों के लिए जाना गया, वहीं Asha Bhosle ने हर उस शैली को अपनाया जिसे अन्य गायक छूने से भी हिचकते थे। यही कारण है कि उन्होंने कैबरे, ग़ज़ल, पॉप, रोमांटिक और लोकगीत—हर शैली में अपनी अलग छाप छोड़ी। उनका करियर आठ दशकों के भी अधिक लंबा रहा, जिसमें उन्होंने 12,000 से अधिक गीत रिकॉर्ड किए और लगभग 20 भाषाओं में अपनी आवाज दी। 1943 में



एक मराठी फिल्म से शुरू हुआ उनका सफर हिंदी सिनेमा के स्वर्णिम दौर तक पहुंचा। ‘नया दौर’, ‘तीसरी मंजिल’, ‘हरे

राम हरे कृष्ण’, ‘उमराव जान’, ‘इजाजत और ‘रंगीला’ जैसी फिल्मों में उनके गीत आज भी उतने ही लोकप्रिय हैं।

Asha Bhosle की आवाज की सबसे बड़ी खासियत उसकी बहुमुखी प्रतिभा थी। ‘पिया तू अब तो आज’ में जहां चंचलता

और मस्ती थी, वहीं ‘दिल चीज क्या है’ में गहरी संवेदशीलता और नजकत देखने को मिली। ‘चुर लिया है तुमने’ जैसा

रोमांटिक गीत हो या ‘दम मारो दम’ जैसी बिदास धुन—हर गीत में उन्होंने अपनी आत्मा डाल दी। संगीतकार O. P. Nayyar के साथ उनकी जोड़ी ने 1950 और 60 के दशक में धूम मचा दी। वहीं R. D. Burman के साथ उनके सहयोग ने संगीत को एक नया आयाम दिया। इन दोनों के साथ काम करते हुए उन्होंने अपनी प्रतिभा का ऐसा प्रदर्शन किया, जिसने उन्हें संगीत की दुनिया में अमर बना दिया। फिल्म ‘उमराव जान’ उनके करियर का मील का पत्थर साबित हुई। संगीतकार Khayyam के निर्देशन में गाए गए ‘दिल चीज क्या है’ और ‘इन आंखों की मस्ती के’ जैसे गीतों ने उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार दिलाया और यह साबित किया कि उनकी कला को कोई सीमा नहीं है। उनकी निजी जिंदगी भी संघर्षों से भरी रही, लेकिन उन्होंने हर चुनौती का सामना डटकर किया। उन्होंने न केवल एक सफल गायिका के रूप में पहचान बनाई, बल्कि एक सफल उद्यमी भी रहीं। दुबई और ब्रिटेन में उनके ‘Asha’s’ नाम से रेस्तरां आज भी उनकी पहचान का हिस्सा हैं। उनके निधन पर पूरे देश में शोक की लहर है। प्रधानमंत्री Narendra Modi ने उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि “भारतीय

संगीत का एक स्वर्णिम अध्याय समाप्त हो गया” राष्ट्रपति Droupadi Murmu ने कहा कि उनकी आवाज आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी। कांग्रेस नेता Rahul Gandhi सहित कई प्रमुख नेताओं और कलाकारों ने भी उनके निधन पर गहरा दुःख व्यक्त किया। Asha Bhosle ने केवल गीत नहीं गाए, बल्कि उन्होंने भावनाओं को जीवंत किया। उनकी आवाज में प्रेम था, दर्द था, मस्ती थी और जीवन के हर रंग की झलक थी। यही कारण है कि उनके गीत आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने अपने समय में थे। उनका जाना एक अपूर्णीय क्षति है, लेकिन उनकी आवाज हमेशा हमारे बीच रहेगी। जब भी कोई ‘अधी न जाओ छोड़कर’ गुनगुनाएगा, जब ‘इन आंखों की मस्ती’ की महफिल सजेगी या ‘चुर लिया है तुमने’ की धुन बजेगी—Asha Bhosle की मौजूदगी हर दिल में महसूस होगी। आज पूरा देश नम आंखों से उन्हें विदाई दे रहा है, लेकिन यह विदाई केवल शरीर की है, उनकी आवाज की नहीं। क्योंकि कुछ आवाजें कभी खत्म नहीं होती—वे समय के साथ और भी गहरी होती जाती हैं। Asha Bhosle ऐसी ही एक जम्ती आवाज थीं, हैं और हमेशा रहेंगी।

गुजरात के वेजा गांव में मच्छरों का कहर: रिश्ते टूट रहे, रातें बेबस और जिंदगी ठहर सी गई

Rajkot। गुजरात के राजकोट जिले के वेजा गांव की पहचान कभी एक सामान्य ग्रामीण बस्ती के रूप में होती थी, जहां लोग अपनी रोजमर्रा की जिंदगी, खेती-बाड़ी और सामाजिक परंपराओं के साथ शांतिपूर्वक जीवन बिताते थे। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में इस गांव की पहचान एक ऐसे स्थान के रूप में बन गई है, जहां मच्छरों का आतंक इंसानी जिंदगी पर भारी पड़ गया है। स्थिति इतनी भयावह हो चुकी है कि यहां मेहमान रात बिताने से कतराते हैं, रिश्ते टूट रहे हैं और गांव की सामाजिक संरचना तक प्रभावित हो रही है। वेजा गांव में मच्छरों का प्रकोप केवल एक सामान्य स्वास्थ्य समस्या नहीं रह गया है, बल्कि यह अब सामाजिक, आर्थिक और मानसिक संकट का रूप ले चुका है। ग्रामीणों का कहना है कि जैसे ही सूरज ढलता है, मच्छरों की श्रृंखला मानो पूरे गांव पर हमला कर देता है। दिन में आने वाले मेहमान भी शाम होते-होते जल्दी लौटने की कोशिश करते हैं, क्योंकि रात बिताना उनके लिए किसी सजा से कम नहीं होता। इस गंभीर समस्या का सबसे ज्यादा असर गांव के युवाओं की शादी पर पड़ा है। आसपास के गांवों और शहरों के लोग अब वेजा गांव में रिश्ते करने से साफ इनकार कर रहे हैं। कई परिवारों के बेटे विवाह योग्य हो चुके हैं, लेकिन मच्छरों के डर से रिश्ते नहीं टिक पा रहे हैं। जिन घरों में पहले शायदियों की रौनक हुआ करती थी, वहां अब सन्नाटा पसरा हुआ है। ग्रामीण बताते हैं कि कई बार रिश्ता तय होने के बाद जब लड़की वाले गांव देखने आते हैं, तो मच्छरों की स्थिति देखकर तुरंत पीछे हट जाते हैं।



इस समस्या केवल इंसानों तक सीमित नहीं है, बल्कि पशुधन भी इसकी चपेट में है। गांव के पशुपालक बताते हैं कि मच्छरों के काटने से गाय-भैंस लगातार बीमार पड़ रही हैं। इससे दूध उत्पादन में भारी गिरावट आई है, जो ग्रामीणों की आय का मुख्य स्रोत है। हालात इतने खराब हो चुके हैं कि कई किसान अपने पशुओं को बेचकर पर मजबूर हो रहे हैं। पशुओं को बचाने के लिए लोग बड़े-बड़े मच्छरदानी जाल का उपयोग कर रहे हैं, लेकिन यह भी स्थायी समाधान नहीं है। आर्थिक रूप से भी गांव के लोग बुरी तरह प्रभावित हो रहे हैं। मच्छरों से बचाव के लिए दवाइयों, स्प्रे और मच्छरदानियों पर हर महीने बड़ी रकम खर्च हो रही है। ग्रामीणों का कहना है कि हर 5-6 महीने में मच्छरदानियां फट जाती हैं, जिससे बार-बार नया खर्च उठाना पड़ता है। जो थोड़ी-बहुत कमाई केवल होती है, उसका बड़ा हिस्सा इसी पर खर्च हो जाता है। वेजा गांव के लोग पिछले 7-8 वर्षों से इस समस्या से जूझ रहे हैं। उनका कहना है कि गांव के आसपास गंदा पानी जमा रहता है और जलकुंभी बिहार के जहानाबाद का रहने वाला मच्छरनाशक पाउडर का छिड़काव कर देता है, जिससे कुछ समय के लिए राहत मिलती है, लेकिन समस्या ज्यों की त्यों बनी रहती है। जब भी किसी विभाग से संपर्क किया जाता है, तो अधिकारी जिम्मेदारी से बचते हुए कहते हैं कि यह उनके अधिकार क्षेत्र में नहीं आता। इस आपसी तालमेल की कमी ने समस्या को और गंभीर बना दिया है। गांव के लोगों में अब निराशा और गुस्सा दोनों बढ़ते जा रहे हैं। उनका कहना

है कि अगर प्रशासन ही हाथ खड़े कर दे, तो वे आखिर कैसे जिंटे? हजारों मच्छरों के बीच रहना उनके लिए रोज की लड़ाई बन चुका है। बच्चों की पढ़ाई प्रभावित हो रही है, बुजुर्गों की सेहत बिगड़ रही है और महिलाओं के लिए घरेलू काम करना भी मुश्किल हो गया है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों का कहना है कि मच्छरों की बढ़ती संख्या केवल असुविधा ही नहीं, बल्कि डेंगू, मलेरिया और चिकनगुनिया जैसी गंभीर बीमारियों का खतरा भी बढ़ाती है। ऐसे में वेजा गांव के लोगों के लिए यह समस्या और भी चिंताजनक हो जाती है। ग्रामीणों की मांग है कि प्रशासन इस समस्या को गंभीरता से लेते हुए स्थायी समाधान निकाले। वे चाहते हैं कि गांव में जल निकासी की उचित व्यवस्था की जाए, जलकुंभी को पूरी तरह साफ किया जाए और मच्छरों के प्रजनन स्थलों को खत्म करने के लिए वैज्ञानिक और दीर्घकालिक उपाय किए जाएं। आज वेजा गांव एक ऐसे मोड़ पर खड़ा है, जहां मच्छरों का आतंक केवल सामाजिक अस्तित्व का संकट बन चुका है। अगर समय रहते ठोस कदम नहीं उठाए गए, तो यह समस्या और विकराल रूप ले सकती है। फिलहाल, गांव के लोग इसी उम्मीद में जी रहे हैं कि उनकी आवाज प्रशासन तक पहुंचेगी और उन्हें इस संकट से मुक्ति मिलेगी।

JSSC एक्साइज कांस्टेबल परीक्षा: पेपर लीक की अफवाह निकली झूठी, सॉल्वर गैंग ने अभ्यर्थियों से करोड़ों की टगी; 164 गिरफ्तार

Ranchi। झारखंड की राजधानी रांची में आयोजित Jharkhand Staff Selection Commission (JSSC) एक्साइज कांस्टेबल भर्ती परीक्षा को लेकर फैली पेपर लीक की चर्चाओं पर बड़ा खुलासा हुआ है। जांच में सामने आया है कि परीक्षा का प्रश्नपत्र लीक नहीं हुआ था, बल्कि एक संगठित सॉल्वर गैंग ने अभ्यर्थियों को झोंठा देकर करोड़ों रुपये की टगी को अंजाम दिया। शनिवार को Jharkhand Staff Selection Commission और रांची पुलिस द्वारा संयुक्त प्रेस कॉन्फ्रेंस में इस पूरे मामले का खुलासा किया गया। अधिकारियों ने स्पष्ट किया कि परीक्षा पूरी तरह परादर्श और निष्पक्ष तरीके से संपन्न कराई गई थी, लेकिन कुछ आपराधिक तत्वों ने अभ्यर्थियों की चिंता और प्रतिस्पर्धा का फायदा उठाकर उन्हें गुमराह किया।

जांच के दौरान पुलिस ने इस मामले में अब तक कुल 164 लोगों को गिरफ्तार किया है, जिनमें 5 सॉल्वर गैंग के सक्रिय सदस्य और 159 अभ्यर्थी शामिल हैं। पुलिस के अनुसार, इस गिरोह का सरगना बिहार के जहानाबाद का रहने वाला अतुल वत्स है, जिसने अपने साथियों के साथ मिलकर अभ्यर्थियों को यह भरोसा दिलाया कि वह उन्हें परीक्षा का असली प्रश्नपत्र उपलब्ध कराएगा। गैंग ने प्रत्येक अभ्यर्थी से करीब 15-15 लाख रुपये वसूले। इस तरह यह पूरा नेटवर्क करोड़ों रुपये की टगी को अंजाम देने में सफल रहा। पुलिस जांच में यह भी सामने आया कि अभ्यर्थियों को एक स्थान पर इकट्ठा कर तथ्यांकवित “लीक पेपर” रटवाया जा रहा था, ताकि उन्हें विश्वास दिलाया जा सके कि उन्हें असली प्रश्नपत्र मिल चुका है। जांच के तमाड़ थाना क्षेत्र में पुलिस को

गुप्त सूचना मिली थी कि एक भवन में बड़ी संख्या में अभ्यर्थियों को कथित प्रश्नपत्र याद कराया जा रहा है। इसके बाद कई थानों की पुलिस ने संयुक्त कार्रवाई करते हुए छापेमारी की और मौके पर, जिसके आधार पर यह बड़ी कार्रवाई संभव हो सकी। उन्होंने कहा कि इस तरह गिरफ्तार कर लिया गया। जब पुलिस ने कथित प्रश्नपत्र की जांच की, तो पाया गया कि वह वास्तविक परीक्षा के प्रश्नपत्र से निकल मेल नहीं खाता था। इससे साफ हो गया कि यह पूरा मामला सुनिोजित टगी का था, न कि पेपर लीक का। Prashant Kumar, जो Jharkhand Staff Selection Commission के प्रभारी अध्यक्ष हैं, ने कहा कि परीक्षा पूरी ईमानदारी और सख्ती के साथ कराई गई थी। उन्होंने स्पष्ट किया कि पेपर लीक होने का कोई भी प्रमाण नहीं मिला है

और यह केवल अफवाह थी, जिसे टगी ने अपने फायदे के लिए इस्तेमाल किया। वहीं रांची के वरीय पुलिस अधीक्षक Rakesh Ranjan ने बताया कि पुलिस को समय रहते सूचना मिल गई थी, जिसके आधार पर यह बड़ी कार्रवाई संभव हो सकी। उन्होंने कहा कि इस तरह गिरोह युवाओं के भविष्य से खिलवाड़ करते हैं और इनके खिलाफ सख्त कार्रवाई जारी रहेगी। इस पूरे मामले में एक और महत्वपूर्ण पहलू सामने आया है कि गिरफ्तार किए गए 159 अभ्यर्थी भी इस टगी के जाल में फंसने के बावजूद नियमों के उल्लंघन के दोषी पाए गए हैं। Jharkhand Staff Selection Commission ने ऐसे सभी अभ्यर्थियों को आजीवन किसी भी भर्ती परीक्षा में शामिल होने से प्रतिबंधित कर दिया है। यह घटना प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी

कर रहे लाखों युवाओं के लिए एक बड़ी चेतना बनी है। विशेषज्ञों का कहना है कि किसी भी प्रकार के “शॉर्टकट” या “लीक पेपर” के लालच में पड़ना न केवल आर्थिक नुकसान पहुंचाता है, बल्कि करियर को भी पूरी तरह बर्बाद कर सकता है। पुलिस अब इस नेटवर्क के अन्य संभावित सदस्यों और इसके विस्तार की जांच कर रही है। यह भी पता लगाया जा रहा है कि क्या इस गैंग ने अन्य राज्यों में भी इसी तरह की टगी को अंजाम दिया है। फिलहाल, इस खुलासे के बाद यह स्पष्ट हो गया है कि JSSC परीक्षा में पेपर लीक जैसी कोई घटना नहीं हुई थी, बल्कि यह पूरी सांजिश अभ्यर्थियों को ठगने के लिए रची गई थी। प्रशासन ने अभ्यर्थियों से अपील की है कि वे अफवाहों पर ध्यान न दें और केवल आधिकारिक सूचनाओं पर ही भरोसा करें।

Shajapur। मध्य प्रदेश के शाजापुर जिले से हनीट्रैप और ब्लैकमेलिंग का एक चौकाने वाला मामला सामने आया है, जिसने न सिर्फ कानून-व्यवस्था पर सवाल खड़े किए हैं, बल्कि समाज में बढ़ते साइबर और धांवतात्मक अपराधों की गंभीर तस्वीर भी उजागर की है। कोतवाली थाना क्षेत्र में एक बुजुर्ग व्यक्ति को योजनाबद्ध तरीके से जाल में फंसाकर उससे करीब 33 लाख रुपये की वसूली की गई। पुलिस ने इस मामले में मुख्य आरोपी महिला को गिरफ्तार कर लिया है, जबकि अन्य आरोपियों की तलाश जारी है। पीड़ित Rameshchandra ने पुलिस को बताया कि यह पूरा मामला वर्ष 2023 में शुरू हुआ, जब उनकी मुलाकात भरड़ स्थित एक शिव मंदिर में Parvati Bairagi नामक महिला से हुई। शुरू में सामान्य बातचीत से शुरू हुआ यह परिचय धीरे-धीरे नजदीकियों में बदल गया। महिला ने विश्वास जीतने के बाद मोबाइल फोन के जरिए बातचीत शुरू की और फिर एक दिन व्हाट्सएप वीडियो कॉल के माध्यम से

आपत्तिजनक वीडियो रिकॉर्ड कर लिया। यहीं से ब्लैकमेलिंग का सिलसिला शुरू हुआ। आरोपी महिला Parvati Bairagi और उसके सहयोगियों—Rajendra Bairagi, Sharad Bairagi और Sanjana Bairagi—ने बुजुर्ग को धमकाना शुरू कर दिया। उन्होंने कहा कि बुजुर्ग व्यक्ति को योजनाबद्ध तरीके से जाल में फंसाकर उससे करीब 33 लाख रुपये की वसूली की गई। पुलिस ने इस मामले में मुख्य आरोपी महिला को गिरफ्तार कर लिया है, जबकि अन्य आरोपियों की तलाश जारी है। पीड़ित Rameshchandra ने पुलिस को बताया कि यह पूरा मामला वर्ष 2023 में शुरू हुआ, जब उनकी मुलाकात भरड़ स्थित एक शिव मंदिर में Parvati Bairagi नामक महिला से हुई। शुरू में सामान्य बातचीत से शुरू हुआ यह परिचय धीरे-धीरे नजदीकियों में बदल गया। महिला ने विश्वास जीतने के बाद मोबाइल फोन के जरिए बातचीत शुरू की और फिर एक दिन व्हाट्सएप वीडियो कॉल के माध्यम से

रहे और 12 अप्रैल 2026 तक 20 लाख रुपये और देने का दबाव बना रहे थे। पैसे न देने पर जान से मारने और समाज में बदनाम करने की धमकी दी जा रही थी। लगातार मानसिक प्रताड़ना और आर्थिक शोषण से परेशान होकर अंततः पीड़ित को कोतवाली थाने में शिकायत दर्ज कराई। मामले की गंभीरता को देखते हुए प्रभारी Santosh Baghel ने तत्काल एफआईआर दर्ज कर कार्रवाई शुरू की। पुलिस टीम ने तेजी से कार्रवाई करते हुए मुख्य आरोपी महिला को हिरासत में ले लिया। थाना प्रभारी ने बताया कि चार नामजद आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है और अन्य आरोपियों की तलाश के लिए छापेमारी जारी है। पुलिस यह भी जांच कर रही है कि क्या यह गिरोह इसी तरह अन्य लोगों को भी अपना शिकार बना चुका है। यह मामला समाज के लिए एक गंभीर चेतावनी है कि किस तरह सुनिोजित तरीके से लोगों को धांवतात्मक जाल में फंसाकर आर्थिक शोषण किया जा रहा है।

तीन दल, एक चेहरा: गुजरात की सियासत में ‘एक उम्मीदवार—तीन पार्टियां’ का अनोखा खेल

Ahmedabad। गुजरात की स्थानीय राजनीति में उस समय एक दिलचस्प और हैरान करने वाला मोड़ आ गया, जब Gujarat के दाहोद जिले की पिपेरो सीट से एक ही व्यक्ति ने तीन अलग-अलग राजनीतिक दलों—Bharatiya Janata Party, Indian National Congress और Aam Aadmi Party—से नामांकन दाखिल कर दिया। इस असामान्य घटनाक्रम ने न सिर्फ स्थानीय स्तर पर बल्कि राज्यभर में सियासी चर्चाओं को गर्म कर दिया है। दाहोद जिला पंचायत चुनाव के तहत पिपेरो सीट अचानक सुर्खियों का केंद्र बन गई है। यहां कुल 11 नामांकन पत्र दाखिल किए गए, लेकिन सबसे ज्यादा ध्यान खींचने वाली बात यह रही कि Bharatsinh Vakhala ने तीन अलग-अलग दलों के टिकट पर तीन-तीन फॉर्म भर दिए। यह घटना भारतीय चुनावी राजनीति में दुर्लभ मानी जा रही है, क्योंकि आमतौर पर एक उम्मीदवार एक ही पार्टी से अपनी दावेदारी पेश करता है। दरअसल, गुजरात में पंचायत और नगर पालिका चुनावों के लिए नामांकन



भरने की अंतिम तारीख 11 अप्रैल थी। इस दौरान पूरे राज्य में बड़ी संख्या में उम्मीदवारों ने अपनी दावेदारी पेश की। आंकड़ों के मुताबिक, 34 जिला पंचायतों में 4900 से अधिक नामांकन पत्र दाखिल हुए, जबकि दाहोद जिला पंचायत की 50 सीटों के लिए कुल 286 फॉर्म जमा किए गए। इन आंकड़ों के बीच पिपेरो सीट का यह मामला पूरी प्रक्रिया को असाधारण बना देता है। Bharatsinh Vakhala का राजनीतिक इतिहास भी कम दिलचस्प

आधी रात का खौफनाक सच: जलती चिता पर लेटकर युवक ने दी जान, तंत्र-मंत्र की चर्चाओं से दहला जबलपुर

मध्य प्रदेश के जबलपुर जिले से सामने आई एक दिल दहला देने वाली घटना ने न केवल स्थानीय लोगों को खतब कर दिया है, बल्कि पूरे समाज को सोचने पर मजबूर कर दिया है। कि आखिर एक इंसान किस मानसिक स्थिति में इतना भयावह कदम उठा सकता है। सिंहरा के खिलौला क्षेत्र में घटी इस घटना ने भय, रहस्य और अंधविश्वास के कई सवाल खड़े कर दिए हैं। एक 27 वर्षीय युवक ने आधी रात विकराल रूप ले सकी है। फिलहाल, गांव के लोग इसी उम्मीद में जी रहे हैं कि उनकी आवाज प्रशासन तक पहुंचेगी और उन्हें इस संकट से मुक्ति मिलेगी।

भी मुश्किल है। यह घटना शनिवार और रविवार की दरम्यानी रात की है, जब पूरा इलाका गहरी नींद में था और रम्यशा घाट पर सन्नाटा पसरा हुआ था। दिन में एक ग्रामीण का अंतिम संस्कार किया गया था और हिंदू परंपरा के अनुसार, चिता को जलता हुआ छोड़कर परिजन वापस अपने घर लौट गए थे। लेकिन उसी चिता ने कुछ घंटों बाद एक और जिंदगी को निगल लिया। मृतक की पहचान सिन्धु कौल उर्फ शुभम कौल के रूप में हुई है, जो खिलौला क्षेत्र का ही रहने वाला था। परिजनों के अनुसार, यह शनिवार रात करीब 3 बजे बिना किसी को बताए घर से निकल गया था। उस समय किसी को अंदाजा

नहीं था कि वह किस खौफनाक इरादे के साथ घर से बाहर निकला है। जब सुबह तक वह वापस नहीं लौटा, तो परिवार के लोगों की चिंता बढ़ने लगी और उन्होंने उसकी गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई। लेकिन असली भयावहता तब सामने आई, जब रविवार सुबह लगभग 7 बजे उसी रम्यशा घाट पर लोग अस्थियों चुनने पहुंचे। वहां का दृश्य इतना उघड़ना था कि लोगों की चोंच निकल गई। धक्कती राख के ऊपर एक और युवक का आधा जला हुआ शव पड़ा हुआ था। यह कोई सामान्य मौत नहीं थी—यह एक ऐसा दृश्य था, जिसे देखकर कोई भी सामान्य व्यक्ति

लंबे समय तक मानसिक रूप से विचलित हो सकता है। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। खिलौला थाना प्रभारी रमेश सिंह अपनी टीम के साथ पहुंचे और शव को कब्जे में लेकर जांच शुरू की। प्रारंभिक जांच में यह लेकिन असली भयावहता तब सामने आई, जब रविवार सुबह लगभग 7 बजे उसी रम्यशा घाट पर लोग अस्थियों चुनने पहुंचे। वहां का दृश्य इतना उघड़ना था कि लोगों की चोंच निकल गई। धक्कती राख के ऊपर एक और युवक का आधा जला हुआ शव पड़ा हुआ था। यह कोई सामान्य मौत नहीं थी—यह एक ऐसा दृश्य था, जिसे देखकर कोई भी सामान्य व्यक्ति

और विचलित करने वाला है। पुलिस अब मृतक के मानसिक स्वास्थ्य, परिवारिक स्थिति और सामाजिक परिस्थितियों की गहराई से जांच कर रही है। परिजनों का कहना है कि सिन्धु पिछले कुछ समय से थोड़ा चुप-चुप रहने लगे थे, लेकिन उसने कभी खुलकर अपनी परेशानी नहीं बताई। यह भी आश्चर्य जाता है जा रही है कि वह किसी मानसिक तनाव या अवसाद से गुजर रहा हो सकता है। आधा के समय में मानसिक स्वास्थ्य एक गंभीर मुद्दा बनता जा रहा है, जिसका अक्सर लोग इसे नजरअंदाज कर देते हैं, लेकिन परिणाम कई बार ऐसे भयावह रूप में सामने आता है।

MP में हनीट्रैप का जाल: बुजुर्ग से 33 लाख की टगी, वीडियो बनाकर करते रहे ब्लैकमेल; एक गिरफ्तार

Shajapur। मध्य प्रदेश के शाजापुर जिले से हनीट्रैप और ब्लैकमेलिंग का एक चौकाने वाला मामला सामने आया है, जिसने न सिर्फ कानून-व्यवस्था पर सवाल खड़े किए हैं, बल्कि समाज में बढ़ते साइबर और धांवतात्मक अपराधों की गंभीर तस्वीर भी उजागर की है। कोतवाली थाना क्षेत्र में एक बुजुर्ग व्यक्ति को योजनाबद्ध तरीके से जाल में फंसाकर उससे करीब 33 लाख रुपये की वसूली की गई। पुलिस ने इस मामले में मुख्य आरोपी महिला को गिरफ्तार कर लिया है, जबकि अन्य आरोपियों की तलाश जारी है। पीड़ित Rameshchandra ने पुलिस को बताया कि यह पूरा मामला वर्ष 2023 में शुरू हुआ, जब उनकी मुलाकात भरड़ स्थित एक शिव मंदिर में Parvati Bairagi नामक महिला से हुई। शुरू में सामान्य बातचीत से शुरू हुआ यह परिचय धीरे-धीरे नजदीकियों में बदल गया। महिला ने विश्वास जीतने के बाद मोबाइल फोन के जरिए बातचीत शुरू की और फिर एक दिन व्हाट्सएप वीडियो कॉल के माध्यम से

आपत्तिजनक वीडियो रिकॉर्ड कर लिया। यहीं से ब्लैकमेलिंग का सिलसिला शुरू हुआ। आरोपी महिला Parvati Bairagi और उसके सहयोगियों—Rajendra Bairagi, Sharad Bairagi और Sanjana Bairagi—ने बुजुर्ग को धमकाना शुरू कर दिया। उन्होंने कहा कि बुजुर्ग व्यक्ति को योजनाबद्ध तरीके से जाल में फंसाकर उससे करीब 33 लाख रुपये की वसूली की गई। पुलिस ने इस मामले में मुख्य आरोपी महिला को गिरफ्तार कर लिया है, जबकि अन्य आरोपियों की तलाश जारी है। पीड़ित Rameshchandra ने पुलिस को बताया कि यह पूरा मामला वर्ष 2023 में शुरू हुआ, जब उनकी मुलाकात भरड़ स्थित एक शिव मंदिर में Parvati Bairagi नामक महिला से हुई। शुरू में सामान्य बातचीत से शुरू हुआ यह परिचय धीरे-धीरे नजदीकियों में बदल गया। महिला ने विश्वास जीतने के बाद मोबाइल फोन के जरिए बातचीत शुरू की और फिर एक दिन व्हाट्सएप वीडियो कॉल के माध्यम से

रहे और 12 अप्रैल 2026 तक 20 लाख रुपये और देने का दबाव बना रहे थे। पैसे न देने पर जान से मारने और समाज में बदनाम करने की धमकी दी जा रही थी। लगातार मानसिक प्रताड़ना और आर्थिक शोषण से परेशान होकर अंततः पीड़ित को कोतवाली थाने में शिकायत दर्ज कराई। मामले की गंभीरता को देखते हुए प्रभारी Santosh Baghel ने तत्काल एफआईआर दर्ज कर कार्रवाई शुरू की। पुलिस टीम ने तेजी से कार्रवाई करते हुए मुख्य आरोपी महिला को हिरासत में ले लिया। थाना प्रभारी ने बताया कि चार नामजद आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है और अन्य आरोपियों की तलाश के लिए छापेमारी जारी है। पुलिस यह भी जांच कर रही है कि क्या यह गिरोह इसी तरह अन्य लोगों को भी अपना शिकार बना चुका है। यह मामला समाज के लिए एक गंभीर चेतावनी है कि किस तरह सुनिोजित तरीके से लोगों को धांवतात्मक जाल में फंसाकर आर्थिक शोषण किया जा रहा है।

150 हाथियों जितना वजन उठाने वाली क्रेन बनी इंजीनियरिंग का चमत्कार, बुलेट ट्रेन प्रोजेक्ट ने रचा नया इतिहास

भारत की तकनीकी और बुनियादी ढांचा क्षमताएं एक नए युग में प्रवेश कर रही हैं, और इसका सबसे बड़ा उदाहरण इस समय अहमदाबाद-मुंबई बुलेट ट्रेन कॉरिडोर में देखने को मिल रहा है। देश की सबसे महत्वाकांक्षी परिवहन परियोजनाओं में शामिल इस हाई-स्पीड रेल प्रोजेक्ट में ऐसा इंजीनियरिंग कारनामा सामने आया है, जिसने न केवल भारतीय रेलवे बल्कि वैश्विक निर्माण तकनीक के क्षेत्र में भी ध्यान आकर्षित किया है। इस परियोजना के अंतर्गत उपयोग की गई अत्याधुनिक क्रॉलर क्रेन लगभग 150 हाथियों के बराबर वजन उठाने में सक्षम बताई जा रही है, जिसने निर्माण कार्य को अभूतपूर्व गति और सटीकता प्रदान की है।

यह परियोजना नेशनल हाई स्पीड रेल कॉरिडोर लिमिटेड की देखरेख में संचालित हो रही है, जो भारत में पहली बुलेट ट्रेन परियोजना का संचालन कर रही है। इस पूरे ट्रेक निर्माण में जिस तकनीक का इस्तेमाल किया जा रहा है, वह आधुनिक इंजीनियरिंग की उस ऊंचाई

को दर्शाता है, जहां भारी संरचनाओं को भी बेहद सुरक्षित और नियंत्रित तरीके से स्थापित किया जा सकता है। हाल ही में गुजरात के अहमदाबाद के मणिनगर क्षेत्र में एक विशाल प्रीकास्ट आरसीसी पोर्टल बीम को सफलतापूर्वक स्थापित किया गया, जिसका वजन लगभग 1360 मीट्रिक टन बताया जा रहा है। यह उपलब्ध इसलिए भी विशेष है क्योंकि इसे मात्र 3.5 घंटे के सीमित ट्रेफिक ब्लॉक के भीतर पूरा किया गया, जिससे रेलवे संचालन पर न्यूनतम प्रभाव पड़ा। इस पूरे ऑपरेशन में जिस क्रेन का उपयोग किया गया, उसकी क्षमता 2200 टन तक की है, जो इसे भारतीय निर्माण इतिहास की सबसे शक्तिशाली मशीनों में से एक बनाती है।

इस विशाल संरचना का आकार भी अपने आप में उल्लेखनीय है। यह पोर्टल बीम लगभग 34 मीटर लंबा, 5.5 मीटर चौड़ा और 4.5 मीटर ऊंचा है। इसे उच्च गुणवत्ता वाले M50 ग्रेड कंक्रीट से तैयार किया गया है, जिससे इसकी मजबूती और दीर्घायु सुनिश्चित होती है। इस



प्रकार की संरचनाएं उच्च गति वाली ट्रेनों के लिए आवश्यक स्थिरता और सुरक्षा प्रदान करती हैं, जो 300 किलोमीटर प्रति घंटे से अधिक की रफ्तार पर भी सुरक्षित संचालन सुनिश्चित करती हैं। इस पूरे ऑपरेशन को बेहद जटिल और

चुनौतीपूर्ण माना गया, क्योंकि इतने भारी भार को उठाना और उसे सटीक स्थान पर स्थापित करना आसान कार्य नहीं होता। इसके लिए क्रेन को साइट तक पहुंचाने में लगभग 110 ट्रेलरों का इस्तेमाल किया गया। इसके बाद विशेषज्ञ इंजीनियरों की

टीम ने इसे चरणबद्ध तरीके से असेंबल किया, ताकि किसी भी प्रकार की तकनीकी त्रुटि या असंतुलन की संभावना न रहे। सुपर-लिफ्ट तकनीक से लैस यह क्रेन भारी संरचनाओं को नियंत्रित तरीके से उठाने और स्थापित करने में अत्यंत

सक्षम है। इस पूरे निर्माण कार्य के दौरान सुरक्षा मानकों का विशेष ध्यान रखा गया। लगभग 3 घंटे 30 मिनट के लिए रेलवे ट्रैक पर ट्रेफिक ब्लॉक लिया गया, जिसके दौरान पूरी प्रक्रिया को सावधानीपूर्वक अंजाम दिया गया। कार्य पूर्ण होने के बाद रेलवे यातायात को पुनः सामान्य रूप से बहाल कर दिया गया, जिससे यह सुनिश्चित हो सका कि सामान्य संचालन पर कोई दीर्घकालिक प्रभाव न पड़े। केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने इस उपलब्धि पर प्रशंसा व्यक्त करते हुए इसे भारत की इंजीनियरिंग क्षमता का महत्वपूर्ण उदाहरण बताया। उन्होंने सोशल मीडिया के माध्यम से इस सफलता की जानकारी साझा की और इसे देश की तकनीकी प्रगति की दिशा में एक बड़ा कदम बताया। उनके अनुसार, यह परियोजना भारत को उन देशों की श्रेणी में शामिल कर रही है, जो हाई-स्पीड रेल तकनीक में वैश्विक स्तर पर अग्रणी हैं। परियोजना से जुड़े इंजीनियरों के

अनुसार, यह केवल एक शुरुआती चरण है और आने वाले समय में इसी तरह के कई अन्य पोर्टल बीमों का निर्माण और स्थापना की जाएगी। P06, P07, P08 और P09 जैसे संरचनाओं में भी इसी प्रकार के विशाल ढांचों को क्रमिक रूप से स्थापित किया जाएगा। इन सभी संरचनाओं का वजन लगभग 1070 से 1110 मीट्रिक टन के बीच है, जिन्हें उच्चतम तकनीकी मानकों के अनुसार तैयार किया जा रहा है। यह पूरा बुलेट ट्रेन कॉरिडोर मुंबई से शुरू होकर अहमदाबाद तक विस्तारित है और इसके मार्ग में कई महत्वपूर्ण शहरी और औद्योगिक क्षेत्र आते हैं। मणिनगर क्षेत्र में इसका एलाइन्मेंट पारंपरिक रेलवे के तीन ट्रैकों को पार करता है और ओल्ड रेलवे कॉलोनी, क्रिकेट ग्राउंड तथा कांकड़िया क्षेत्र से होकर गुजरता हुआ आगे अहमदाबाद स्टेशन और साबरमती मल्टी-मॉडल ट्रांजिट हब की ओर बढ़ता है। यह पूरा नेटवर्क भविष्य में देश की सबसे तेज और आधुनिक रेल प्रणाली के रूप में विकसित होगा।

इस परियोजना का सबसे बड़ा महत्व केवल गति या तकनीक तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भारत की इंजीनियरिंग क्षमता, योजना प्रबंधन और बड़े पैमाने पर समन्वय की शक्ति को भी दर्शाता है। जिस तरह से इतने विशाल और जटिल परियोजनाओं में सक्षम देशों की सूची में तेजी से आगे बढ़ रहा है। बुलेट ट्रेन परियोजना केवल एक परिवहन सुविधा नहीं, बल्कि भारत के भविष्य की गति का प्रतीक बनती जा रही है। यह परियोजना आने वाले वर्षों में न केवल यात्रा के समय को कम करेगी, बल्कि देश की आर्थिक गतिविधियों, औद्योगिक विकास और क्षेत्रीय संपर्क को भी नई दिशा देगी। यह इंजीनियरिंग का वह अस्थायी है, जो भारत को तकनीकी आत्मनिर्भरता और वैश्विक प्रतिस्पर्धा की ओर और मजबूत रूप से अग्रसर कर रहा है।

सपनों का घर या अधूरा अधिकार? बिल्टर सिस्टम के जाल में फंसा आम खरीदार

एक आम इंसान के जीवन में घर सिर्फ चार दीवारों का ढांचा नहीं होता, बल्कि वह उसकी पूरी जिंदगी की कमाई, उम्मीद और सुरक्षा का प्रतीक होता है। घर बनाने का सपना हर व्यक्ति देखता है, चाहे वह नौकरीपेशा हो या छोटा व्यापारी। वह अपनी पूरी जिंदगी की बचत जोड़ता है, बैंक से लोन लेता है और परिवार की जरूरतों को सीमित करके एक ही लक्ष्य रखता है— अपना एक स्थायी ठिकाना।

लेकिन आज के समय में यह सपना जितना आकर्षक दिखाया जाता है, कई बार उतना ही जटिल और संघर्षपूर्ण भी साबित होता है। बड़े-बड़े रियल एस्टेट प्रोजेक्ट्स में खरीदारों को आकर्षक ब्रॉशर, मॉडल फ्लैट और सुनहरे वादों के जरिए यह विश्वास दिलाया जाता है कि उनका भविष्य सुरक्षित है। लोकेशन, सुविधाएं, क्लब हाउस, पार्किंग और आधुनिक जीवनशैली के नाम पर एक ऐसा सपना दिखाया जाता है, जिसमें आम आदमी अपनी सारी बचत लगा देता है। समस्या तब शुरू होती है जब यही सपना धीरे-धीरे एक बोझ बन जाता है। कई मामलों में देखा गया है कि बिल्टर द्वारा अतिरिक्त शुल्कों की मांग शुरू हो जाती है। पार्किंग, मेटेनेंस, क्लब हाउस, डेवलपमेंट चार्ज और अन्य कई मदों के नाम पर खरीदार से लगातार अतिरिक्त पैसे वसूल जाते हैं। जिस व्यक्ति ने पहले ही अपनी पूरी जमा-पूंजी लगा दी होती है, वह इन मांगों के सामने मजबूर महसूस करता है। उसके पास या तो भुगतान करने का विकल्प होता



है या कानूनी लड़ाई में उलझने का जोखिम, जो समय और धन दोनों की दृष्टि से भारी पड़ता है। इसी प्रक्रिया में कई बार एक और गंभीर पहलू सामने आता है, जहां कुछ प्रोजेक्ट्स में संपत्ति के अधिकार और जमीन के स्वामित्व को लेकर स्पष्टता नहीं होती। खरीदार को फ्लैट या यूनिट तो मिल जाती है, लेकिन जिस भूमि पर वह बना होता है, उसका नियंत्रण पूरी तरह उसके पास नहीं होता। यह स्थिति भविष्य में गंभीर विवादों का कारण बन सकती है, विशेषकर तब जब सोसाइटी के पुनर्निर्माण या पुनर्विकास की आवश्यकता पड़ती है। वास्तविक समस्या तब और गहरी हो जाती है जब सोसाइटी के गठन और हैंडओवर के बाद भी कई मामलों में जमीन या परियोजना पर आंशिक नियंत्रण बिल्टर या उसके सहयोगियों के पास ही बना रहता है।

ऐसे हालात में निवासियों के लिए सामूहिक निर्णय लेना कठिन हो जाता है, क्योंकि कानूनी और प्रशासनिक अधिकार पूरी तरह उनके हाथ में नहीं होते। यही कारण है कि कई हाउसिंग सोसाइटी में वर्षों बाद भी विवाद की स्थिति बनी रहती है। कई बार यह भी देखा गया है कि खरीदारों को मजबूरी में ऐसी शर्तों को स्वीकार करना पड़ता है, क्योंकि वे पहले ही आर्थिक रूप से बहुत अधिक निवेश कर चुके होते हैं। बैंक का लोन, मासिक किस्तें और बढ़ते खर्च उन्हें एक ऐसे दायरे में बांध देते हैं, जहां वे खुलकर विरोध भी नहीं कर पाते और पीछे हट भी नहीं सकते। यह स्थिति एक प्रकार की मनोवैज्ञानिक और आर्थिक निर्भरता पैदा करती है। इस पूरे सिस्टम में सबसे बड़ी चुनौती पारदर्शिता की कमी है। खरीदार को शुरुआत

में जो जानकारी दी जाती है, वह अक्सर पूरी नहीं होती या बाद में बदल दी जाती है। समय पर कब्जा न मिलना, सुविधाओं का अधूरा रह जाना और अतिरिक्त शुल्कों का बोझ आम समस्याएं बन चुकी हैं। ऐसे मामलों में आम आदमी का सपना धीरे-धीरे तनाव और असुरक्षा में बदल जाता है। हालांकि यह भी सच है कि रियल एस्टेट सेक्टर देश की अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और इसमें लाखों लोगों को रोजगार भी मिलता है। लेकिन इसके साथ-साथ यह भी जरूरी है कि खरीदारों के अधिकार सुरक्षित रहें और कोई भी पक्ष अत्यधिक सभ्यता और दुरुपयोग न कर सके। पारदर्शिता, स्पष्ट अनुबंध और कानूनी सुरक्षा इस क्षेत्र की मूल आवश्यकता बन चुकी हैं। आज के समय में जबरन इस बात को है कि रियल एस्टेट सेक्टर में ऐसे मजबूत नियम और निगरानी तंत्र हों, जो खरीदार और बिल्टर दोनों के हितों के बीच संतुलन बना सके। रेरा जैसी संस्थाएं इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हैं, लेकिन उनका सख्ती से पालन हो। कई बार यह कहा जा सकता है कि घर का खर्च और पैसे खर्च हो गया कि जिस नाम से प्रभाव और इमोशंस को दिखाती है, जो अक्सर टोन एज के मनोभावों को प्रभावित करते हैं। कई कवितारों आज की युवा पीढ़ी से रखी जाने वाली उम्मीदों, लगातार तुलना करने के कल्चर और उन शांत संघर्षों को दिखाती हैं, जो शायद सतही तौर पर हमेशा दिखाई नहीं सुरक्षित, पारदर्शी और पूरी तरह स्वाभिमानी के साथ मिले। वरना जो सपना जीवनभर की मेहनत से जुड़ा होता है, वही एक लंबी परेशानी और संघर्ष की कहानी में बदल सकता है।

महाकाल की नगरी में फर्जी अफसर का खेल बेनकाब भस्म आरती में वीआईपी एंटी की कोशिश नाकाम

मध्य प्रदेश की धार्मिक राजधानी उज्जैन में एक ऐसा मामला सामने आया है, जिसने प्रशासनिक सतर्कता और धार्मिक व्यवस्था दोनों पर सवाल खड़े कर दिए हैं। श्री महाकालेश्वर मंदिर में भस्म आरती जैसी अत्यंत विशिष्ट और सीमित प्रवेश वाली पूजा में शामिल होने के लिए एक व्यक्ति ने खुद को आईएएस अधिकारी बताकर न केवल विशेष सुविधा पाने की कोशिश की, बल्कि सरकारी तंत्र पर दबाव बनाने का भी प्रयास किया। हालांकि उसकी यह चाल ज्यादा देर तक नहीं चल सकी और अंततः पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया। पूरे घटनाक्रम के अनुसार, आरोपी ने खुद को केंद्र सरकार के एक्जिक्शन मंत्रालय में

संयुक्त सचिव बताकर मंदिर प्रशासन और सिकंदर हाउस के अधिकारियों पर रौब जमाया। उसने दावा किया कि वह उच्च पद पर कार्यरत है और उसे भस्म आरती में विशेष व्यवस्था दी जाए। यही नहीं, उसने इसी प्रभाव का इस्तेमाल करते हुए सिकंदर हाउस में दो कमरे भी बुक करवा लिए, जो आमतौर पर उच्च अधिकारियों और विशिष्ट मेहमानों के लिए आरक्षित होते हैं। मामला उस समय संदिग्ध हो गया जब सिकंदर हाउस के कर्मचारियों ने उससे पहचान पत्र दिखाने को कहा। आरोपी को लगातार बहाने बनाता रहा और स्पष्ट रूप से कोई वैध दस्तावेज प्रस्तुत नहीं कर सका। उसके व्यवहार और जवाबों में असंगति

देखकर कर्मचारियों को संदेह हुआ, जिसके बाद उन्होंने सतर्कता दिखाते हुए संबंधित विभाग से पुष्टि करने का निर्णय लिया। जब एक्जिक्शन मंत्रालय से संपर्क किया गया, तो यह स्पष्ट हो गया कि जिस नाम से आरोपी खुद को संयुक्त सचिव बता रहा था, उस पद पर कोई ऐसा अधिकारी मौजूद ही नहीं है। यहीं से उसके फर्जीबाड़े की परतें खुलनी शुरू हो गईं। तुरंत वरिष्ठ अधिकारियों को सूचना दी गई और पुलिस को मामले में हस्तक्षेप करना पड़ा। महाकाल धाम पुलिस ने आरोपी को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू की, जिसमें उसने कई तरह की झूठी कहानियां गढ़ने की कोशिश की। उसने पुलिस को यह तक

कह दिया कि उसके परिवार में आईएएस अधिकारी हैं और उसके खिलाफ कार्रवाई करने पर परिणाम भूताने पड़ सकते हैं। जब एक्जिक्शन मंत्रालय से संपर्क किया गया, तो यह स्पष्ट हो गया कि जिस नाम से आरोपी खुद को संयुक्त सचिव बता रहा था, उस पद पर कोई ऐसा अधिकारी मौजूद ही नहीं है। यहीं से उसके फर्जीबाड़े की परतें खुलनी शुरू हो गईं। तुरंत वरिष्ठ अधिकारियों को सूचना दी गई और पुलिस को मामले में हस्तक्षेप करना पड़ा। महाकाल धाम पुलिस ने आरोपी को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू की, जिसमें उसने कई तरह की झूठी कहानियां गढ़ने की कोशिश की। उसने पुलिस को यह तक

फर्जी पहचान और पद का दुरुपयोग कर धार्मिक और प्रशासनिक व्यवस्थाओं में संघ लगाने की कोशिश करते हैं। भस्म आरती, जो कि महाकाल मंदिर की सबसे पवित्र और विशिष्ट परंपराओं में से एक है, उसमें प्रवेश के लिए सख्त नियम बनाए गए हैं। ऐसे में किसी का फर्जी तरीके से वीआईपी सुविधा पाने का प्रयास न केवल नियमों का उल्लंघन है, बल्कि श्रद्धालुओं की भावनाओं के साथ भी खिलवाड़ है। पुलिस अब इस बात की भी जांच कर रही है कि आरोपी ने इससे पहले कहां-कहां इस तरह की फर्जी पहचान का इस्तेमाल किया है और क्या उसने अन्य स्थानों पर भी इसी तरह लाभ उठाने की कोशिश की है।

पश्चिम रेलवे द्वारा साबरमती आसनसोल – साबरमती के बीच समर स्पेशल एसी ट्रेन का संचालन

पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की अतिरिक्त भीड़ को ध्यान में रखते हुए साबरमती-आसनसोल – साबरमती के बीच विशेष किराये पर समर स्पेशल एसी ट्रेन चलाने का निर्णय लिया गया है। जिसका विवरण निम्नानुसार है:

ट्रेन संख्या 09435/09436
साबरमती – आसनसोल - साबरमती
समर स्पेशल ट्रेन

ट्रेन संख्या 09435 साबरमती – आसनसोल समर स्पेशल ट्रेन (02 ट्रिप) दिनांक 17 एवं 24 अप्रैल 2026 (शुक्रवार) को साबरमती से 22:55 बजे प्रस्थान करेगी और तीसरे दिन रविवार को 13:15 बजे आसनसोल पहुंचेगी। इसी तरह ट्रेन संख्या ट्रेन संख्या 09436 आसनसोल – साबरमती समर स्पेशल ट्रेन (02 ट्रिप) दिनांक 19 एवं 26 अप्रैल 2026 (रविवार) को आसनसोल से 16:10 बजे प्रस्थान करेगी और तीसरे

दिन मंगलवार को 04:30 बजे साबरमती पहुंचेगी।
मार्ग में दोनों दिशाओं में यह ट्रेन महेशाणा, पालनपुर, आबू रोड, फालना, मारवाड़, ब्यावर, अजमेर, जयपुर, सवाई माधोपुर, इंदगाह आगरा, डूंडला, गाँवदपुरी, प्रयागराज, पं. दीनदयाल उपाध्याय, सासाराम, गंगा, कोडरमा और धनबाद स्टेशनों पर रुकेगी।
यह ट्रेन एसी 3 टियर (LHB) कोचों के साथ विशेष किराये (Special Fare) पर चलेगी।

ट्रेन संख्या 09435 साबरमती – आसनसोल समर स्पेशल के लिए बुकिंग दिनांक 13.04.2026 से सभी PRS काउंटेर्स एवं IRTC वेबसाइट पर उपलब्ध होगी।
ट्रेनों के समय, ठहराव एवं अन्य जानकारी के लिए www.enquiry.indianrail.gov.in का अवलोकन करें।

वडोदरा का रेलवे हेरिटेज म्यूजियम आमजन के लिए खुला रहेगा निःशुल्क

“विश्व धरोहर दिवस” के अवसर पर पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल द्वारा प्रतापनगर स्थित रेलवे हेरिटेज म्यूजियम, रोलिंग स्टॉक पार्क एवं हेरिटेज पार्क को आमजन के लिए 13 अप्रैल 2026 से 18 अप्रैल 2026 तक निःशुल्क खोलने का निर्णय लिया गया है।

पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल के जनसंपर्क अधिकारी श्री अनुभव सक्सेना द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञापन के अनुसार इस अवधि के दौरान यह परिसर प्रतिदिन प्रातः 9:00 बजे से सायं 5:00 बजे तक आगंतुकों के लिए निःशुल्क खुला रहेगा, जिससे अधिक से अधिक लोग भारतीय रेलवे की गौरवशाली विरासत को नजदीक से देख और समझ सकें।
वडोदरा मंडल के वरिष्ठ मंडल यांत्रिक इंजीनियर श्री अनिल कुमार ने बताया कि प्रतापनगर स्थित यह रेलवे हेरिटेज संग्रहालय भारतीय



रेल की समृद्ध नैरोगेज विरासत को संजोए हुए है। यहाँ प्रदर्शित संग्रह न केवल ऐतिहासिक महत्व रखते हैं, बल्कि भावी पीढ़ियों को रेलवे के विकास एवं तकनीकी प्रगति से परिचित कराने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हेरिटेज पार्क, संग्रहालय एवं रोलिंग स्टॉक पार्क

के माध्यम से इस बहुमूल्य धरोहर को संरक्षित किया गया है। पश्चिम रेलवे, वडोदरा मंडल सभी नागरिकों से आग्रह करता है कि वे इस अवसर का लाभ उठाते हुए अपने परिवार एवं मित्रों के साथ इस ऐतिहासिक स्थल का अवलोकन करें और भारतीय रेल की विरासत से जुड़े।

के माध्यम से इस बहुमूल्य धरोहर को संरक्षित किया गया है। पश्चिम रेलवे, वडोदरा मंडल सभी नागरिकों से आग्रह करता है कि वे इस अवसर का लाभ उठाते हुए अपने परिवार एवं मित्रों के साथ इस ऐतिहासिक स्थल का अवलोकन करें और भारतीय रेल की विरासत से जुड़े।

“एन ईवनिंग ऑफ यंग वडर्स” में किशोरी कवयित्री यशवी लोढ़ा लिखित दूसरी पुस्तक “द टीनेज क्रोनिकल्स-बुक 2” पर हुई सार्थक चर्चा

मुंबई। मायानगरी मुंबई के केम्पस कॉर्नर स्थित क्रॉसवर्ड बुक सेंटर में आयोजित एक गरिमापूर्ण समारोह “एन ईवनिंग ऑफ यंग वडर्स” में किशोरी कवयित्री सुश्री यशवी लोढ़ा के दूसरे पोएट्री कलेक्शन “द टीनेज क्रोनिकल्स- बुक 2” के विभिन्न पहलुओं पर बॉलीवुड की विभिन्न हस्तियों और प्रबुद्ध साहित्यकारों द्वारा सार्थक चर्चा की गई।

इस गार्मेशोरी भी शम में बॉलीवुड के कई सैलिब्रिटी और मशहूर साहित्यकार मौजूद थे, जिनमें फिल्म अभिनेत्री ईशा देओल, रकुल प्रीत सिंह और जैकी भगनानी के अलावा वरिष्ठ साहित्यकार श्रीमती मंजू लोढ़ा मुख्य रूप से शामिल रही। इस स्टार-स्टडेड गैदरिंग में जाने-माने सोशलाइटर, करीबी फेमिली फ्रेंड्स और शुभचिंतक बड़ी संख्या में अपना प्यार और सपोर्ट दिखाने के लिए मौजूद रहे। “द टीनेज क्रोनिकल्स – बुक 2” कुल 45 कविताओं का एक कलेक्शन है, जो किशोरों के बड़े होने की अंदरूनी दुनिया को बखूबी दर्शाता है। किशोरों में अपनी पहचान, प्रेरण, अकेलापन, फेयरनेस, उम्मीद और खुद को खोजने जैसी थीम के जरिये यह किताब उन सारे सवाल और इमोशंस को दिखाती है, जो अक्सर टोन एज के मनोभावों को प्रभावित करते हैं। कई कवितारों आज की युवा पीढ़ी से रखी जाने वाली उम्मीदों, लगातार तुलना करने के कल्चर और उन शांत संघर्षों को दिखाती हैं, जो शायद सतही तौर पर हमेशा दिखाई नहीं सुरक्षित, पारदर्शी और पूरी तरह स्वाभिमानी के साथ मिले। वरना जो सपना जीवनभर की मेहनत से जुड़ा होता है, वही एक लंबी परेशानी और संघर्ष की कहानी में बदल सकता है।



वालों को रकने, खुद को बेहतर समझने और रोजमर्रा के पलों में मतलब खोजने के लिए बढ़ावा देता है। इस संग्रह की कवितारों इस बात पर जोर देती हैं कि कल्पनयुक्त और खुद पर शक, बड़े होने का एक स्वाभाविक हिस्सा है। मुंबई की प्रमुख युवा कवयित्री और लेखिका यशवी लोढ़ा, इस अपनी दूसरी किताब में एक ऐसे आवाज प्रेष करती हैं, जो देखने वाली और खुद को समझने वाली दोनों हैं। उनकी लिखाई उन भावनाओं के बारे में इमानदार बातचीत शुरू करने की कोशिश करती है, जो कई युवा महसूस करते हैं, लेकिन अक्सर उन्हें बताने में मुश्किल होती है। इस अवसर पर यशवी

मौजूद लोगों ने उनके काम को करीब से देखा। भारी भीड़ और उत्साहपूर्ण रीस्पॉन्स ने आज के साहित्य में युवा आवाज की बढ़ती पहचान को बखूबी दिखाया। उल्लेखनीय है कि हाल ही में, एक प्राइवेट फंक्शन में “द टीनेज क्रोनिकल्स – बुक 2” के लोकांगण के बाद इसकी

एडवांस कॉपी को रिव्यू करते हुए, पाठ किया और यह किताब लिखने के कारणों की सारगर्भित जानकारी भी दी। इसके बाद एक इंटरैक्टिव सेशन और बुक साईनिंग हुई, जहाँ

सदी के महानायक श्री अमिताभ बच्चन द्वारा भी कवयित्री यशवी लोढ़ा की कविताओं की मुक्त कंठ से सराहना की गई।

फूलों की सुगंध में सजी भक्ति, सूरत के गुरुकुल में टाकोरजी की दिव्य सेवा का अनुपम उत्सव

गुजरात के सूरत में स्थित श्री स्वामीनारायण गुरुकुल में इन दिनों भक्ति, सेवा और सौंदर्य का अद्भुत संगम देखने को मिल रहा है। वेड रोड पर स्थित इस गुरुकुल में गर्मी के मौसम के अवसर पर भगवान श्री स्वामीनारायण की सेवा में जो भावनात्मक और कलात्मक समर्पण दिखाई दे रहा, उसने हर श्रद्धालु के मन को भक्ति से सराबोर कर दिया।

सुबह की कोमल धूप के साथ शुरू हुआ यह सेवा कार्य दोपहर तक चलता रहा, लेकिन इसमें शामिल संतों, भक्तों, युवाओं और महिलाओं के उत्साह में कहीं कोई कमी नहीं आई। लगभग सात घंटे तक चले इस विशेष आयोजन में हर कोई एक ही भावना से जुड़ा हुआ था—“भगवान की सेवा, अपने जीवन का सर्वोच्च कर्तव्य।” इस सेवा के दौरान फूलों की कोमल कलियों और सुगंधित पंखुड़ियों से टाकोरजी के लिए, जो वाघा (वस्त्र) तैयार की गई, वह केवल एक सजावट नहीं, बल्कि श्रद्धा की जीवंत अभिव्यक्ति थी।

इस वाघा को बनाने में जिन फूलों का उपयोग किया गया, उनमें डॉलर, मोगरा, चमेली, गुलाब, ऑर्किड और जरबेरा जैसे सुगंधित और रंग-बिरंगे पुष्प शामिल थे। हर फूल को बड़े प्रेम और साधना से सजाया गया, ताकि भगवान के वस्त्र में सौंदर्य के साथ-साथ शौलता का भी अनुभव हो। यह केवल कलात्मक कोशल का प्रदर्शन नहीं था, बल्कि एक आध्यात्मिक साधना थी, जिसमें हर पंखुड़ी के साथ भक्ति का भाव जुड़ा हुआ था।

स्वामीनारायण परंपरा में “जैसी देह वैसी सेवा” का सिद्धांत अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। इसका अर्थ है कि जैसे मनुष्य अपनी आवश्यकताओं के अनुसार मौसम के अनुरूप जीवनशैली अपनाता है, उसी प्रकार भगवान की सेवा भी ऋतु के अनुसार की जानी चाहिए। गर्मी के मौसम में भगवान को ठंडक पहुंचाने के लिए फूलों, चंदन और



सुगंधित पदार्थों का उपयोग किया जाता है। यही कारण है कि इस अवसर पर फूलों की वाघा तैयार कर भगवान का विशेष श्रृंगार किया गया। इस सेवा कार्य का संचालन पुजारी विवेकस्वरूपदासजी स्वामी के मार्गदर्शन में हुआ। उनके नेतृत्व में संतों और भक्तों को आध्यात्मिक ऊर्जा से भर दिया। जैसे ही भजनों की मधुर ध्वनि गुंजती, श्रद्धालु भाव-विभोर होकर भगवान के दर्शन में लीन हो जाते। ऐसा प्रतीत होता था मानो पूरा परिसर एक दिव्य लोक में परिवर्तित हो गया हो, जहां केवल भक्ति, प्रेम और आनंद का ही वास है।

इस आयोजन ने यह भी संदेश दिया कि सच्ची भक्ति केवल मंदिरों तक सीमित नहीं होती, बल्कि वह हर उस कार्य में झलकती है, जो समर्पण और प्रेम से किया जाता है। फूलों से बनी यह वाघा केवल भगवान के लिए एक वस्त्र नहीं थी, बल्कि वह उन अनगिनत भावनाओं का प्रतीक था, जो हर भक्त के हृदय में भगवान के प्रति उमड़ती हैं। अतः, सूरत के इस गुरुकुल में हुआ यह आयोजन केवल एक धार्मिक परंपरा का निर्वहन नहीं, बल्कि भक्ति, सेवा और सामूहिकता का ऐसा उदाहरण है, जो हर व्यक्ति को यह सिखाता है कि जब मन में सच्चा प्रेम और श्रद्धा हो, तो साधारण से साधारण कार्य भी असाधारण बन जाता है।

यहां की यह पुण्य सेवा आने वाले समय में भी श्रद्धालुओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी रहेगी और भगवान के प्रति उनकी आस्था को और अधिक गहरा करेगी।